43

पवित्र शास्त्र का मैटरहॉर्न

(8:35-39)

संसार के यह शानदार और भव्य पहाड़ों में से एक स्विटज़रलैंड और इटली की सीमा पर पहाड़ियों की चोटी पर स्थित 14,692 फीट (4,478 मीटर) ऊंचा मैटरहॉर्न पर्वत कठिन होने के बावजूद स्विटज़रलैंड की ओर से इस पहाड़ की चढ़ाई पर अनुभवी पर्वतारोही आसानी से चढ़ जाते हैं। इटली की ओर से ऐसा सज़्भव नहीं है, जो दीवार की एक बाड़ है और बहुत ही ख़तरनाक है। 14 जुलाई 1865 तक इटली की ओर से उस पर कोई नहीं चढ़ा था। एक गायक सहित पर्वतारोहियों के तीन सदस्यीय दल ने उन ख़तरनाक दीवारों पर चढ़ते हुए जान गवाई जहां एक भी कदम गलत पड़ने का अर्थ निश्चित मौत है। यह पहाड़ मैटरहॉर्न क्षेत्र की अन्य चोटियों जितना ऊंचा नहीं है, परन्तु इसकी एक बात इसे सबसे अलग और भव्य बनाती है। सूर्योदय या सूर्यास्त के समय पहाड़ गहरे लाल रंग की चमक देता है। पहाड़ की इस सुन्दरता को "अतुल्य" कहा गया है।

बाइबल के कई शानदार भाग हमें मैटरहॉर्न की याद दिलाते हैं। उदाहरण के लिए पुराने नियम में हमें व्यवस्थाविवरण 33:27क, यशायाह 40:31, और मीका 6:8 जैसे वचन मिलते हैं, परन्तु इस पाठ के लिए हम नये नियम में उन दो आयतों में जा रहे हैं, जिन्हें साहित्य में विश्वास की सबसे शानदार अभिव्यज़्ति कहा गया है-रोमियों 8:38, 39:

> ज़्योंकि मैं निश्चय जानता हूं, कि न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएं, न वर्तमान, न भविष्य, न सामर्थ, न ऊंचाई, न गहिराई और न कोई और सृष्टि, हमें परमेश्वर के प्रेम से, जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, अलग कर सकेगी।

"बाइबल के मैटरहॉर्न" को समझने में हमारी सहयाता के लिए मैं अपने अध्ययन का आरज़्भ आयत 35 से करना चाहता हूं। फिर संकेत रूप से बात करते हुए हम "ढलानों से होते हुए ऊपर जाएंगे।"

चढ़ाई (8:35-37)

प्रतिदिन की समस्याएं (आयतें 35, 36)

हमारे वचन पाठ का आरज़्भ वाक्पटुता वाला प्रश्न है: "कौन हम को मसीह के प्रेम से अलग करेगा?" (आयत 35क)। अध्याय 5 प्रेम को इस प्रकार व्यज़्त करता है:

> ज़्योंकि जब हम निर्बल ही थे, तो मसीह ठीक समय पर भज़्तिहीनों के लिए मरा।

> किसी धर्मी जन के लिए कोई मरे, यह तो दुर्लभ है, परन्तु ज़्या जाने किसी भले मनुष्य के लिए कोई मरने का भी हियाव करे, परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा (आयतें 6-8)।

हमें उस अद्भुत प्रेम से कौन अलग कर सकता है? पौलुस के प्रश्न का सांकेतिक उज़र है "कोई नहीं-और कुछ नहीं।" जॉन आर. डज़्ल्यू. स्टॉट ने लिखा है कि "हमारी मसीही आशा मज़बूती से परमेश्वर के अडोल प्रेम पर आधारित है।"[1] पौलुस ने अपने समय के मसीही लोगों के सामने आने वाली परीक्षाओं का नाम बताकर अपने प्रश्न को विस्तार दिया: "ज़्या ज़्लेश, या संकट, या उपद्रव, या अकाल, या नङ्गाई, या जोखिम, या तलवार?" (8:35ख)। इस सूची में पहले दो शज़्द "परेशानी" के लिए सामान्य शज़्द हैं परन्तु प्रत्येक में थोड़ा से अन्तर पर ज़ोर दिया गया है। "ज़्लेश" का अनुवाद *thlipsis* से किया गया है जिसका "मूल अर्थ 'दबाव, प्रैशर' है।"[2] यह वह शज़्द है, जिसका इस्तेमाल अंगूरों को रौंदकर उनमें से जूस निकालने के लिए किया जाता था। ज़्या आपने कभी ऐसी परेशानी सही है? ज़्या जीवन में आप कभी चकनाचूर हुए हैं? तो फिर आप समझते हैं कि *thlipsis* का अर्थ ज़्या है।

"संकट" का अनुवाद मिश्रित यूनानी शज़्द (*stenochoria*) से किया गया है जो किसी तंग या सीमित जगह का संकेत है (*stenos* ["तंग"] के साथ *chora* ["एक स्थान"])।[3] ज़्या आपने कभी शिकंजे में कसे जाना महसूस किया है, जिसमें आपको सांस लेने के लिए कोई जगह न हो? तो फिर आप जानते हैं कि *stenochoria* ज़्या होता है। सुझाव दिया गया है कि *thlipsis* और *stenochoria* को मिलाने पर उनका अर्थ *भीतरी कष्ट* और *भीतरी निराशा* होता है।[4] दोनों शज़्दों में हर प्रकार की समस्या और परेशानी आ जाती है, जिसकी हम कल्पना कर सकते हैं।

सामान्य शज़्दों के बाद पौलुस के समय के मसीही लोगों द्वारा सही जाने वाली विशेष समस्याएं हैं। "उपद्रव" शज़्द का अनुवाद (*diogmos*) का अर्थ शिकारी द्वारा जानवर का पीछा किए जाने की तरह, पीछा किया जाना[5] है। LB के अनुसार "जब हमारा शिकार होता है।" देखा गया है कि "कलीसिया का जन्म कज़्जा किए हुए इलाके में और बेरहम तानाशाहों के शासन में हुआ था" जो मसीही लोगों का शिकार करते और उन्हें सताते थे। "अकाल" (*limos*, भोजन की कमी) "नंगाई" (*gumotes*, कपड़ों की कमी) का अर्थ मसीह के पीछे चलने के विज़ीय परिणाम हो सकते हैं।

"जोखिम" (*kindumos* "पतरा" के लिए सामान्य शज़्द है, जबकि "तलवार" *machaira*) के हिंसक मृत्यु तथा हत्या सहित कई डरावने अर्थ हैं। शहीद की मौत मरने वाले पहले प्रेरित याकूब को "तलवार से मरवा डाला" गया (प्रेरितों 12:2)। रोम के नाम पत्र में पत्रों की सूची में "तलवार" शज़्द सहित कुछ भविष्यसूचक बात है। कुछ ही सालों में रोम में तलवार बार-बार चमकती थी और पूरी नगर में रंगभूमि की रेत में मसीही लोगों का लहू बहाया जाना था।

सूची को फिर से देखें और आज के समाचार पत्रों की मोटी सुर्खियों में छपे इन शज़्दों की कल्पना करें: "**ज़्लेश! संकट! उपद्रव! अकाल! नंगाई! जोखिम! तलवार!**" "ये सब बातें प्रेम के कोमल दुलार के अलावा कुछ भी लगते हैं।"[6] वास्तव में अनजान लोगों को, अर्थात इस प्रकार बोझ तले दबे लोग परमेश्वर द्वारा त्यागे हुए और यहां तक कि परमेश्वर के संतान लगेंगे।

पौलुस ने मसीही लोगों को आश्वस्त किया कि इन में से *कोई भी* आतंक उन्हें परमेश्वर के प्रेम से अलग न कर सकता है और न करेगा।

पौलुस अपने निजी अनुभव की बात कर रहा था। फिर से 2 कुरिन्थियों 6:4, 5; 11:26, 27; 12:10 में प्रभु के लिए परीक्षाओं में पड़ने के उसके विवरण को देखें। आप पाएंगे कि रोमियों 8:35 में "तलवार" के अलावा बाकी हर तरह की कठिनाई है। तलवार ने पौलुस का सिर अभी उसके तन से अलग नहीं किया था, परन्तु आरम्भिक मसीही लोगों के अनुसार, अन्तत: रोम में उसका सिर काट डाला गया था।[7] इसलिए क्या इस प्रेरित ने यह निष्कर्ष निकाला कि वह परमेश्वर का त्यागा हुआ या परमेश्वर का सताया हुआ था? नहीं, इसके विपरीत उसने कहा कि "अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है; ... परमेश्वर के पुत्र पर है, जिस ने मुझ से प्रेम किया, और मेरे लिए अपने आप को दे दिया" (गलातियों 2:20)।

हमारे वचन पाठ में यहां, पौलुस यह ज़ोर देने के लिए रुक गया कि परीक्षाएं और सताव कुछ नहीं कर सकते अर्थात परमेश्वर के लिए जीने के लिए उनकी उम्मीद की जा सकती है (देखें रोमियों 5:3; 8:17; प्रेरितों 14:22)। ऐसा उसने भजनों की पुस्तक से उद्धृत करते हुए किया: "जैसा लिखा है, कि तेरे लिए हम दिन भर घात किए जाते हैं; हम बध होने वाली भेड़ों की नाईं गिने गए हैं" (रोमियों 8:36; देखें भजन संहिता 44:22)।

कई लोग यह सोचते हैं कि भजन संहिता 44 बाबुल की दासता के समय लिखा गया था (देखें आयतें 11, 14)। यह इस्राएलियों को उनकी परेशानियों से निकालने के लिए परमेश्वर के सामने विनती है (आयत 26) जैसे उसने बीते समय में अपने लोगों को निकाला था (आयतें 1-8)। भजन के केन्द्र में यह स्पष्ट पुकार है: "परन्तु हम दिन भर तेरे निमित्त मार डाले जाते हैं, और उन भेड़ों के समान समझे जाते हैं जो वध होने पर हैं" (आयत 22)। "तेरे निमित्त" वाक्यांश उस कारण का सुझाव देता है जिसके लिए वे कष्ट सह रहे थे और वह कारण प्रभु के पीछे चलना था।[8]

"दिन भर मार डाले जाते" "मार डाले" जाने में इब्रानियों 11:37 एक अच्छी व्याख्या देता है: "पत्थरवाह किए गए; आरे से चीरे गए; उनकी परीक्षा की गई; तलवार से मारे गए; वे कंगाली में और क्लेश में और दुख भोगते हुए भेड़ों और बकरियों की खालें ओढ़े हुए, इधर उधर मारे-मारे फिरे।" वध होने के लिए ले जाई जाने वाली भेड़ का रूपक असहाय होने का बोध कराता है। पौलुस ने इस विचार पर ज़ोर देने के लिए कि प्रभु के पीछे चलने वाले लोग दुर्व्यवहार की उम्मीद कर सकते हैं, भजन संहिता 44 में से वचन का इस्तेमाल किया।

एक ईश्वरीय प्रतिज्ञा (आयत 37)

यदि हमारे साथ दुर्व्यवहार होना ही है, तो क्या हमें निराश होना चाहिए? नहीं। आयत 37 में पौलुस ने आयत 35 वाली परीक्षाओं की बात की: "परन्तु इस सब बातों [क्लेश, या संकट, या उपद्रव, या अकाल, या नङ्गाई, या जोखिम, या तलवार] में हम उसके द्वारा जिसने हम से प्रेम किया है, जयवंत से भी बढ़कर हैं।" "हम जयवंत से भी बढ़कर हैं" का अनुवाद एक ही शब्द *hupernikomen* से किया गया है। यह दुर्लभ यूनानी शब्द पवित्र शास्त्र में यहां केवल एक ही बार इस्तेमाल किया गया है। यह "ऊपर" (*huper*[9]) के साथ "विजय पाना" (*nikao*[10]) के अर्थ वाले शब्द को जोड़ता है। "ऊपर" के लिए लातीनी शब्द *super* है। इस कारण CJB "सब बातों

में हम सुपर विजयी हैं।" मैं बचपन से KJV के अनुवाद को पढ़ता आया हूं: "हम जयवंत से भी बढ़कर हैं।" सी. ई. मैकार्टनी ने यह उदाहरण दिया:

> जब लॉर्ड नेल्सन ने नाइल के युद्ध में फ्रांसीसी बेड़े पर अपनी बड़ी विजय का समाचार ब्रिटिश नौसेना विभाग को दिया, तो उसने कहा कि "विजय" उस सब के वर्णन के लिए काफ़ी नहीं था जो कुछ वहां हुआ था।
>
> जब पौलुस ने उस विजय की बात की जो हर प्रकार की मुसीबतों और विपत्तियों और परीक्षाओं और जीवन के दुखों पर उसने यीशु मसीह के द्वारा पाई थी, तो सबसे बड़ा शब्द "विजयी" इसके वर्णन के लिए काफ़ी नहीं है; और इसके लिए उसने कहा "उसके द्वारा जिसने हम से प्रेम किया, जयवंत से भी बढ़कर हैं।"[11]

बहुत से ऐसे ढंग हैं, जिनमें मसीही लोग "जयवंत से भी बढ़कर" हैं। हम "जयवंत से भी बढ़कर" हैं क्योंकि हम केवल अपनी समस्याओं में कायम ही नहीं रहते बल्कि उन पर यह विजय भी पाते हैं। हम "जयवंत से बढ़कर" हैं क्योंकि हम केवल जीवन की चुनौतियों का सामना ही नहीं करते बल्कि परमेश्वर की सहायता से उन चुनौतियों का इस्तेमाल बेहतर लोग बनने के लिए करते हैं। सबसे बढ़कर, हम जयवंत से बढ़कर हैं क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह हमें बड़ी-बड़ी रुकावटों से लड़ने में वियज पाने के योग्य बनाता है। अन्त में हम उसके सामने उपस्थित होंगे और वह इनाम पाएंगे जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते।

आयत 37 की अद्‌भुत प्रतिज्ञा पर मनन करते हुए, "उसके द्वारा जिसने हम से प्रेम किया[12]" शब्दों को नज़रअंदाज न करें। पौलुस अपने ऊपर भरोसा रखने की नहीं बल्कि मसीह पर भरोसा रखने की वकालत कर रहा था। यीशु ने कहा, "मुझ से अलग होकर तुम कुछ नहीं कर सकते" (यूहन्ना 15:5)। पौलुन ने कहा, "जो मुझे सामर्थ देता है उस में मैं सब कुछ कर सकता हूं" (फिलिप्पियों 4:13)। उसने यह भी कहा कि "परमेश्वर ... हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवन्त करता है" (1 कुरिन्थियों 15:57)। संसार विजय पाने के लिए यीशु के *गिर्द* जाने की कोशिश कर रहा है, परन्तु पौलुस ने कहा कि विजय केवल उसके *द्वारा* सम्भव है।

शिखर (8:38, 39)

पौलुस का दृढ़ विश्वास (आयतें 38, 39क)

यह पौलुस का चोटी पर चढ़ना था। हमें शिखर से देखने के लिए तैयार होना चाहिए। रोमियों 8:38 का आरम्भ होता है, "क्योंकि मैं निश्चय जानता हूं।" पौलुस ने *peitho* ("समझाना") का कर्मवाच्य रूप इस्तेमाल किया जो बिना किसी संदेह के पूरी तरह से मानने का संकेत देता है। KJV में "मैं" मानता हूं और NIrV "मैं पक्का मानता हूं।"

पौलुस इस बात को पक्का मानता था? आयत 35 में उसने पूछा था, "कौन [या क्या] हम को मसीह के प्रेम से अलग करेगा?" (आयत 35क)। अब उसने अपने ही प्रश्न का उत्तर दिया:

> क्योंकि मैं निश्चय जानता हूं, कि न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएं, न वर्तमान,

न भविष्य, न सामर्थ, न ऊंचाई, न गहराई और न कोई और सृष्टि, हमें परमेश्वर के प्रेम से, जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, अलग कर सकेगी (आयतें 38, 39)।

पौलुस की सज़्भावित "अलग करने वालों" की सूची में दस चीज़ें हैं। हम इन्हें बर्फ और हिम, चलते तूफ़ान, ख़तरनाक खुली दरारें और अपने आत्मिक मैटरहॉर्न की सीधी दीवारें कह सकते हैं। हम इन सब बातों में "उसके द्वारा जिसने हम से प्रेम किया जयवंत से भी बढ़कर" हो सकते हैं (आयत 37)। इनमें से *कोई भी* हमें परमेश्वर के प्रेम से अलग करने के योग्य नहीं है।

कुछ समय के लिए 38 और 39 आयतों में दी पौलुस की सूची पर विचार करें। इनका आरज़्भ तीन जोड़ों अर्थात मृत्यु और जीवन, स्वर्गदूतों और प्रधानताओं, वर्तमान और भविष्य की बातों से होकर हर चीज़ के पीछे शज़्ति से होता है।[13] फिर आपको और जोड़ों अर्थात उंचाई और गहराई के बाद एक अकेला हवाला "न कोई और सृष्टि" मिलता है। प्रेरित का उद्देश्य जीवन के मार्ग में आने वाली हर रुकावट का विवरण देना नहीं बल्कि विशेष रुकावटों को बताना है। उसने यह ज़ोर देने के लिए कि कोई भी बात, चाहे कोई भी ज़्यों न हो हमें परमेश्वर के प्रेम से अलग नहीं कर सकती, शज़्दों का अज़्बार लगा दिया।

हमें शायद सूची की हर बात का अतिविश्लेषण करने से बचना चाहिए। जे. डज़्ल्यू. मैज़्गर्वे ने लिखा है कि पौलुस ने "इतनी व्यापकता और महत्व वाली अद्भुत बातें जोड़ दी हैं कि उन्हें बिना [घटनाएं] हानि पहुंचाए परिभाषित नहीं किया जा सकता।"[14] तौभी यह विचार करने का महत्व हो सकता है कि पौलुस ने हर शज़्द को ज़्यों शामिल किया। इनमें से हर एक हमें प्रभु से अलग कैसे कर सकता है?

(1) मृत्यु और (2) जीवन। "मृत्यु" *thanatos* पहले आ सकता है ज़्योंकि कई लोगों की नज़रों में यह सबसे भयानक शत्रु है, जिसका हम सामना करते हैं। अविश्वासी व्यज़्ति के लिए, मृत्यु का अर्थ अन्त है। बिना विश्वास वाला व्यज़्ति लिखता है, "प्रिय जॉन नहीं रहा।" परन्तु मसीही व्यज़्ति को परमेश्वर और उसके प्रेम से अलग नहीं कर सकता। किसी ने कहा है, "परमेश्वर हमें मृत्यु की मिट्टी में खो नहीं देता। परमेश्वर के विश्वासयोग्य बालक के लिए मृत्यु राह नहीं बल्कि द्वार है जिसके बीच में से होकर प्रभु के सामने जाना है।" पौलुस ने लिखा, "ज़्योंकि मेरे लिए जीवित रहना मसीह है, और मर जाना लाभ है" (फिलिप्पियों 1:21)। उसने कुरिन्थुस के मसीही लोगों को आश्वस्त किया, "जय ने मृत्यु को निगल लिया" (1 कुरिन्थियों 15:54)।

इसके बाद "जीवन" (*zoe*) का नाम आता है। कई बार लोगों को मृत्यु के बजाय जीवन का सामना करना कठिन लगता है। दोषदर्शियों द्वारा जीवन का वर्णन एक भूल, बीमारी, छल, मूर्ख द्वारा बताई कहानी जिसका कोई महत्व नहीं है और जन्म लेने के दण्ड की सज़ा जेल के रूप में किया जाता है, व्यज़्तिगत तौर पर जीवन में चाहे आपको जो भी मिले, परन्तु ध्यान रखें कि यह आपको परमेश्वर के स्नेहपूर्ण लगाव से अलग नहीं कर सकता। पतरस ने लिखा, "अपनी सारी चिन्ता उसी [परमेश्वर] पर डाल दो, ज़्योंकि उसको तुज़्हारा ध्यान है" (1 पतरस 5:7)। कुछ देर पहले मैंने फिलिप्पियों 4:13 से उद्धृत किया। आइए संदर्भ में उस आयत पर विचार करते हैं:

... मैं ने यह सीखा है कि जिस दशा में हूं, उसी में सन्तोष करूं। मैं दीन होना भी जानता हूं और बढ़ना भी जानता हूं: हर एक बात और सब दशाओं में मैं ने तृप्त होना, भूखा रहना, और बढ़ना-घटना सीखा है। जो मुझे सामर्थ देता है उस में मैं सब कुछ कर सकता हूं (फिलिप्पियों 4:11ख-13)।

(3) स्वर्गदूत और (4) प्रधानताएं। ''स्वर्गदूत'' (*angelos*) का बहुवचन के यूनानी शब्द का अर्थ ''दूत'' है जो शारीरिक रूप में (लोगों)[15] या आत्मिक दूतों (फरिशतों) के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। उसे ''प्रधानताओं'' के साथ जोड़ना इस बात का संकेत हो सकता है कि पौलुस के मन में आत्मिक दूत थे। हम नहीं जानते कि पौलुस ने अपनी सूची में ''स्वर्गदूत'' शामिल क्यों किए। परन्तु नये नियम के समय में कई लोग स्वर्गदूत की पूजा करते थे (कुलुस्सियों 2:18)। इसके अलावा बाइबल अच्छे स्वर्गदूतों के अलावा बुरे स्वर्गदूतों के बारे में भी बताती है (देखें प्रकाशितवाक्य 12:7)। पौलुस ने चेतावनी दी, ''... स्वर्ग से कोई दूत भी उस सुसमाचार को छोड़ जो हम ने तुम को सुनाया है, कोई और सुसमाचार तुम्हें सुनाए, तो शापित हो'' (गलातियों 1:8)। रोमियों 8:38 में पौलुस शायद चेतावनी दे रहा था कि ''स्वर्गदूत चाहे कितने भी शक्तिशाली क्यों न हों, स्वर्गदूत या स्वर्गदूतों का समूह, अच्छे हों या बुरे, किसी में परमेश्वर के प्रेम से तुम्हें अलग करने की सामर्थ नहीं है।''

''प्रधानताएं'' का अनुवाद (arche) के बहुवचन के रूप से किया गया है जिसका अर्थ ''आरम्भ'' है और इसका अर्थ अधिकार में ''पहला'' हो सकता है। इस शब्द का इस्तेमाल मानवीय शासकों की बात करने के लिए किया जाता था (लूका 12:11), परन्तु पौलुस ने आम तौर पर इसे शैतानी शक्ति के लिए इस्तेमाल किया जो आत्मिक तौर पर हमें नष्ट करने की कोशिश कर रही हैं (देखें इफिसियों 6:12)। KJV में ''दुष्ट आत्माओं'' है जबकि NEB में ''अलौकिक शक्तियां'' है। यह बुरे प्राणी चाहे कितने भी भयानक क्यों न हों मसीह ने क्रूस पर उन पर विजय पा ली है (देखें कुलुस्सियों 2:14ख, 15; 1 पतरस 3:22); यानी उनका भविष्य पहले ही तय हो चुका था (देखें 1 कुरिन्थियों 15:24)।

इस वाक्य में ''स्वर्गदूतों'' और ''प्रधानताओं'' के मेल का अर्थ पौलुस के कहने का ढंग हो सकता है कि ''*किसी* आत्मिक शक्ति में हमें परमेश्वर के प्रेम से अलग करने की शक्ति नहीं है।'' ''जैसा सी. एस. लूइस ने बड़ी समझदारी से टिप्पणी की है, हम या तो शैतान और उसके दासों की उपेक्षा करते हैं या उन्हें बहुत अधिक श्रेय देते हैं।''[16]

(5) वर्तमान और (6) भविष्य की बातें। कई लोग आज की समस्याओं से दुखी हैं जबकि अन्य इस बात से परेशान होते हैं कि कल क्या होगा। एवरेट हैरिसन ने टिप्पणी की है कि विश्वासियों के विरुद्ध समय शक्तिहीन है, ''यह अपनी परीक्षाओं और कष्टों के साथ वर्तमान हो या अपनी अनिश्चितताओं के साथ भविष्य।''[17] परमेश्वर ने कहा है, ''मत डर, क्योंकि मैं तेरे संग हूं, इधर उधर मत ताक, क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर हूं; मैं तुझे दृढ़ करूंगा और तेरी सहायता करूंगा, अपने धर्ममय दाहिने हाथ से मैं तुझे सम्हाले रहूंगा'' (यशायाह 41:10)। जब तक हमारा हाथ परमेश्वर के हाथ में है, हम ''दृढ़ और अटल'' रहते हैं (1 कुरिन्थियों 15:58)। चाहे जो भी हो जाए, ''हम जानते हैं, कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उन के लिए सब बातें मिलकर भलाई ही उत्पन्न करती हैं'' (रोमियों 8:28)। इस कारण ''न तो आज होने वाली बातें और न कल होने

वाली बातें" (फिलिप्स) हमें अपने प्रेमी परमेश्वर से अलग कर सकती हैं।

(7) सामर्थ। "सामर्थ" के लिए यूनानी शज़्द *dunamis* से है। पौलुस आम तौर पर आत्मिक शज़्तियों की बात करने के लिए बहुवचन रूप का इस्तेमाल करता था। जिससे उसका यह शत्रु "स्वर्गदूतों" और "प्रधानताओं" से जुड़ जाता है जिनकी बात हमने पहले की है (देखें KJV) परन्तु मसीही लोगों के विरुद्ध होने वाले युद्ध की सभी आत्मिक शज़्तियों के लिए पिछले दो शज़्द काफ़ी होंगे इसलिए पौलुस के मन में वे शैतानी शज़्तियां अर्थात मसीही लोगों को आतंकित करने वाले सांसारिक हाकम होंगे। एक उदाहरण ध्यान में आता है जब प्रेरितों को यहूदी लोगों द्वारा "यीशु के नाम से कुछ भी न बोलना और न सिखलाना" की आज्ञा दी गई थी (प्रेरितों 4:18)। एक और उदाहरण रोमी साम्राज्य का है, जो धीरे-धीरे मसीहियत का सबसे बड़ा दमनकारी बन गया। हमारे कुछ पाठक जानते हैं कि ऐसा सताव होने का ज़्या अर्थ है। मानवीय सरकारों के पास आपको जेल में डालने की शज़्ति हो सकती है, परन्तु उनमें आपको परमेश्वर के प्रेम से अलग करने की शज़्ति *नहीं* है।

(8) ऊंचाई और (9) गहराई। "ऊंचाई" और "गहराई" पौलुस की सूची की सबसे अस्पष्ट बातें हैं। उन्हें "पहचानने के लिए सबसे कठिन शज़्दों के जोड़े" कहा गया है।[19] इन शज़्दों को पढ़ते हुए मेरे ध्यान में भजन संहिता 139 आता है। भजनकार ने पूछा कि हम चाहे कितना भी ऊंचा चले जाएं या कितना ही नीचा चले जाए, हम परमेश्वर की उपस्थिति से भाग नहीं सकते:

> मैं तेरे आत्मा से ज़ागकर किधर जाऊं?
> वा तेरे साज़्हने से किधर ज़ागूं?
> यदि मैं आकाश पर चढ़ूं, तो तू वहां है!
> यदि मैं अपना बिछौना अधोलोक में बिछाऊं तो वहां ज़ी तू है!
> यदि मैं ज़ोर की किरणों पर चढ़कर समुद्र के पार जा बसूं,
> तो वहां ज़ी तू अपने हाथ से मेरी अगुवाई करेगा,
> और अपने दहिने हाथ से मुझे पकड़े रहेगा
> (भजन संहिता 139:7-10)।

कुछ लेखक "ऊंचाई" और "गहराई" का इस्तेमाल प्रतीकात्मक अर्थ में करना पसन्द कर रहे हैं। वे "समृद्ध की ऊंचाई" और "पीड़ा की गहराई"[20] या आनन्द की ऊंचाई और दुख की गहराई या सफलता की ऊंचाई या असफलता की गहराई की बात करते हैं। "ऊंचाइयों पर पहुंचने" का विचार प्रतीकात्मक अर्थ में करते हुए, मुझे प्रभु की कलीसिया के एक सदस्य जेज़्स ए. गार्ल फिल्ड का ध्यान आता है जिन्होंने अमेरिका का राष्ट्रपति बनने से पूर्व प्रचारक तथा ऐल्डर के रूप में सेवा की। गार्ल फिल्ड को किसी जवान प्रचारक द्वारा सरमन के लिए कोई उपयुज़्त वचन बताने को कहा गया। गार्ल फिल्ड ने भजन संहिता 17:15 दोहराया: "जागने पर मैं तेरे स्वरूप से सन्तुष्ट होऊंगा" (भजन संहिता 17:15; KJV)। कुछ देर बाद ही एक हत्यारे की गोली ने गार्ल फिल्ड को जीवन से अलग कर दिया। परन्तु परमेश्वर के प्रेम से नहीं। मैं जब गहराई में जाने की बात सोचता हूं तो मुझे फिर से भजन लिखने वाले के शज़्द याद आते हैं: "हे यहोवा, मैं ने गहिरे स्थानों में से तुझ को पुकारा है!" (भजन संहिता 130:1)।

कुछ लेखक ध्यान देते हैं कि "ऊंचाई" और "गहराई" के लिए यूनानी शज़्दों का इस्तेमाल पहली सदी के ईश्वर रहित ज्योतिष की फिलासफियों में किया जाता था। "ऊंचाई" आकाश में सबसे ऊंचे तारे की सबसे ऊंची स्थिति के लिए और "गहराई" इसकी सबसे निचली स्थिति के लिए था। मूर्तिपूजकों का मानना था कि तारों की स्थिति उनके जीवन को प्रभावित करती और चलाती है। शायद "ऊंचाई" और "गहराई" शज़्दों में ऐसी ही व्यर्थ बनावटी बात थी। परमेश्वर की प्रेरणा से दिए गए पौलुस के शज़्द यह स्पष्ट करते हैं कि मनुष्य जाति को ऐसे अपमानजनक अंधविश्वास से डरने की आवश्यकता नहीं है। हमें परमेश्वर के प्रेम से *कोई चीज़* अलग नहीं कर सकती।

(10) न कोई और सृष्टि। सूची में सबसे अन्तिम बात पौलुस की "ऐसे-ऐसे काम" की तरह है (देखें गलातियों 5:21; KJV) और सूचक शज़्द "इत्यादि" की तरह है। यह तो ऐसा है जैसे पौलुस ने रुककर विचार किया, "मैंने कुछ छोड़ तो नहीं दिया? हां मैं इस वाज़्यांश के साथ इसे पूरा कर सकता हूं: 'न कोई और सृष्टि।' " NCV में "पूरे संसार की कोई और बात" है। अपनी सबसे अधिक दिलचस्पी या सबसे अधिक चिंता पर विचार करें।[21] सबसे अधिक सज़्भवत: विनाश की कल्पना करें। आपके सामने जो भी परेशानी हो, जान लें कि न तो यह और "न कोई और सृष्टि, हमें परमेश्वर के प्रेम से, जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, अलग कर सकेगी।" हम परमेश्वर के प्रेम के दायरे के बाहर कभी नहीं जा सकते। विद्वान एच. सी. जी. माउल रात के समय रोमी ज़्लोज़ियम में गया। किसी ने पूछा, "आपको स्मृति चिह्न चाहिए?" "ज़्लोज़ियम से मिट्टी इकट्ठी कर लो; इसमें सब शहीद हैं।" चांद की रौशनी में माउल उसके मित्रों में रोमियों 8 के अन्तिम भाग पढ़ें। फिर उन्होंने [परमेश्वर] को धन्यवाद दिया जो अपने संतों में जीवन और मृत्यु, जानवरों और मनुष्यों और दुष्टात्माओं के ऊपर विजयी था।[22]

पौलुस की रक्षा (आयत 39ख)

ज़्या हमारे आत्मिक मैटरहॉर्न के शिखर से देखना भयभीत करने वाला नहीं है? एक पल के लिए यहां रुकें; जल्दी से आयत 39 से न जाएं। पौलुस ने इस आयत को समाप्त किया, "परमेश्वर के प्रेम से, *जो हमारे प्रभु यीशु मसीह में है*" (आयत 39ख)। रोमियों 8 की अद्‌भुत प्रतिज्ञाएं केवल उन्हीं के लिए हैं जो "मसीह यीशु में" हैं (8:1; देखें 6:3, 4), अर्थात जो आत्मा के अनुसार जी रहे हैं (देखें 8:12, 13)।

35 से 39 आयतों के विचारों में आनन्द करना और उस उच्च मोड़ पर छोड़ना अद्‌भुत होगा। अफ़सोस कि कई लोगों द्वारा इन आयतों का इस्तेमाल यह सिखाने के लिए किया जाता है कि परमेश्वर की संतान के लिए होना असज़्भव है। इस कारण कुछ अतिरिज़्त बातें जोड़ना आवश्यक है। मेरे भाई कॉय ने दो बातें लिखी हैं जो पौलुस ने 38 से 39 आयतों में नहीं दी: पाप और स्वयं।[23] बाइबल सिखाती है कि पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है (यशायाह 59:1, 2) और यह कि मसीही लोग पापपूर्ण जीवन शैली जीना चुन सकते हैं (देखें याकूब 5:19, 20)। मैज़्गार्वे ने यह योग्यता जोड़ी है: "*(चेले की अपनी इच्छा के अलावा)* कोई बात हमें परमेश्वर के प्रेम से अलग नहीं करती।"[24] यदि चेले के लिए *अपने आपको* परमेश्वर के प्रेम से अलग करना असज़्भव होता तो यहूदा यह न लिखता कि "अपने आपको परमेश्वर के प्रेम में *बनाए रखो*" (यहूदा 21क)

परन्तु हम नकारात्मक पर ही निर्भर न रहें। बल्कि आनन्द करें कि जैसे परमेश्वर के विश्वासयोग्य बालकों के रूप में, हमें उस सर्वश्रेष्ठ प्रेम से कोई अलग *नहीं* कर सकता।

सारांश

रोमियों 8:38, 39 "पवित्र शास्त्र का मैटरहॉर्न" रोमियों की पुस्तक के पहले भाग को समाप्त करने का इससे बेहतर ढंग मुझे समझ नहीं आता! प्रभु की शायद एक चेतावनी देनी सही रहेगी, हमारे लिए प्रतिदिन के अपने जीवनों में इस वचन को लागू करने और इस तथ्य को सचमुच मानने के बजाय कि परमेश्वर हम से प्रेम रखता है, इस वचन की साहित्यक सुन्दरता की सराहना करना आसान है! इस वचन पर अपने नोट्स में मैंने यह विचार शामिल किया: "वह जगह जहां ये बातें सीखी जानी चाहिए *घर* है। माता-पिता को चाहिए कि वे अपने बच्चों के मनों पर इस सच्चाई की छाप छोड़ें कि 'हमारे रास्ते में चाहे कोई भी दिक़्कत क़्यों न आ जाए, परमेश्वर हमारे साथ है!' " हैर्लड हेज़लिप ने लिखा है, "यदि कोई पवित्र शास्त्र के दो या तीन छोटे-छोटे वचन याद करने वाला है, तो ये आयतें [रोमियों 8:35-39], भी जोड़ी जानी चाहिए।"[25] मैं यह सुझाव जोड़ देना चाहता हूं कि उन्हें केवल याद न करें उन्हें अपने दृष्टिकोण का भाग बना लें।

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

दो बार यह पाठ मसीह "के द्वारा" और "में" परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर ज़ोर देता है। इस पाठ में से प्रचार करने पर यह बताना न भूलें कि मसीह का भाग कैसे बन जाता है (रोमियों 6:3, 4; गलातियों 3:26, 27)। यदि आपके सुनने वाले मैटरहॉर्न के बारे में नहीं जानते हैं तो आप किसी ऐसी बड़ी चोटी का नाम बता सकते हैं, जिससे वे परिचित हैं।

यह पाठ बहुत पहले दिए गए प्रवचन के अधूरे नोट्स से आरज़्भ किया गया। इसका विचार और कुछ सामग्रियां सज़्भवतया बहुत पहले भुला दिए गए उस स्रोत से मिलीं। यदि आप उस स्रोत को पहचानते हो तो कृपया आप बताएं।

टिप्पणियां

[1]जॉन आर. डज़्ल्यू. स्टॉट, *दि मैसेज ऑफ़ रोमन्स: गॉड'स गुड न्यूज .फ़ॉर द वर्ल्ड,* दि बाइबल स्पीक़्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1994), 246. [2]डज़्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ़. अंगर, एण्ड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स कज़्पलीट एज़्सपोज़िटरी डिक़्शनरी ऑफ़ ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पज़्लिशर्स, 1985), 17. [3]वही, 27. [4]विलियम हैंड्रिक़्सन, "एज़्सपोज़िशन ऑफ़ पॉल'स एपिस्टल टू द रोमन्स," *न्यू टैस्टामेंट कमैंट्री* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1982), 290. [5]वाइन, 468. [6]लैरी डियसन, *"दि राइटियसनेस ऑफ़ गॉड": ऐन इन-डेप्थ स्टडी ऑफ़ रोमन्स,* संशो. (ज़्लिफटन पार्क, न्यू यॉर्क: लाइफ कज़्युनिकेशंस, 1989), 240. [7]यह परमेश्वर की प्रेरणा रहित आरज़्भिक कलीसिया की मज़बूत परज़्परा के अनुसार है। [8]परमेश्वर द्वारा इस्राएलियों को बाइबल की दासता में दिए जाने की अनुमति देने का प्रमुख कारण अपश्चाज़ाप के साथ उनका ढिठाई का पाप था। प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से यह दासता उनके परमेश्वर के विशेष लोग होने की थी। [9]यदि

आपके सुनने वाले "हायपर" शब्द से परिचत हों तो आप उसका इस्तेमाल उदाहरण के रूप में कर सकते हैं (जैसे "हाइपरएक्टिव" में)। [10]Nike संसार के कुछ भागों में एथलेटिक जूतों का प्रसिद्ध ब्राण्ड है यदि यह आपके इलाके में हो तो आप इस बात का उल्लेख कर सकते हैं *nike* "विजय" के लिए यूनानी शब्द है।

[11]पॉल ली टैन, *इन्साइक्लोपीडिया ऑफ़ 7, 700 इलस्ट्रेशंस* (रॉकविल्ले, मेरीलैंड: अश्योरेंस पब्लिशर्स, 1979), 520 में उद्धृत सी. ई. मैकार्टनी। [12]हम पक्का नहीं कह सकते कि पौलुस ने यहां भूतकाल का इस्तेमाल क्यों किया। शायद उसके मन में मुख्यतया क्रूस में मसीह के प्रेम की अभिव्यक्ति थी। हो सकता है शायद वह केवल इस बात पर ज़ोर देना चाहता हो कि प्रभु का प्रेम *स्थाई* है और उसे बदला नहीं जा सकता। [13]KJV में "powers" के साथ "angels" और "principalities" को इकट्ठे रखा गया है। क्रम में थोड़े से अन्तर से उस बात पर कोई असर नहीं पड़ता कि पौलुस कह रहा था। [14]जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे एण्ड फिलिप वाई. पैंडल्टन, *थेस्सलोनियंस, कोरन्थियंस, गलेशियंस एण्ड रोमन्स* (सिनसिनाटी: स्टैंडर्ड पब्लिशिंग, तिथि नहीं), 371. [15]कुछ लेखकों का विचार है कि पौलुस मानवीय दूतों की बात कर रहा था, जैसे गलत शिक्षा देने वाले (जैसे मत्ती 24:11, 12 में बताया गया है)। अन्य इन "दूतों" को मसीह के लिए जीने से हमें हतोत्साहित करने का प्रयास करने वाले झूठे मित्र कहेंगे। [16]डग्लस जे. मू, *रोमन्स,* दि NIV एप्लीकेशन कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 2000), 287. [17]लियोन मौरिस, *दि एपिस्टल टू द रोमन्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 341 में उद्धृत। [18]देखें 1 कुरिन्थियों 15:24; इफिसियों 1:21; 1 पतरस 3:22. मूल धर्मशास्त्र में इन आयतों में *dunamis* का बहुवचन रूप है। [19]मू, 284. [20]जॉन लोक; जेम्स बर्टन कॉफमैन, *कमैंट्री ऑन रोमन्स* (आस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1973), ३२४.

[21]अपने सुनने वालों में पाए जाने वाले सामान्य भय जैसे युद्ध, आतंकी, न्यूक्लियर बम, प्राकृतिक आपदायें, वातावरण की चिंता, तलाक की बहुतायत, गिरी हुई नैतिकता या कलीसिया की समस्या को विशेष भय के बारे में व्यक्तिगत बनाना। [22]हेडली सी. जी. मोउले, *दि एपिस्टल ऑफ़ सेंट पॉल 'स टू द रोमन्स,* दसवां संस्क., दि एक्सपोजिस्टर'स बाइबल (लंदन: हौडर एण्ड स्टाउटन, 1894), 242-43. [23]कोय रोपर, "दि ट्रांसफार्म्ड लाइफ," *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* (अगस्त 1988): 14. [24]मैक्गर्वे, 371. [25]हैरल्ड हेज़लिप, *डिसाइपलशिप,* दि टवंट्यिथ सेंचुरी सरमन सीरीज़ (अबिलेन, टैक्सस: बिब्लिकल रिचर्स प्रैस, 1977), 160.